महामत कहें ऐ साथ जी, भया चरचा का वखत ।
अब तुम सुनियो चित दे, लाल आगे आए बैठे इन तखत ॥७७॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! अब छठा पहर, रात्रि को ९ से १२ बजे तक अखण्ड परमधाम की चर्चा जो आप स्वामी जी अपने मुखारविंद से करते हैं, उसका समय आ गया है । अब आप सब सुंदरसाथ भी अपने मन, चित्त, बुध को माया से हटाकर धनी के चरणों में लगाकर एकाग्र होकर सुनो । लालदास जी भी इस समय चर्चा सुनने के लिए तख्त के सामने आकर बैठ जाते हैं ।

*( प्रकरण ६८, चौपाई ४१०५ )*

## छठा पहर

अब कहों पहर छठे की, जित चरचा होत है हक ।
बैठे सुंनत जमात, जो खास गिरोह बुजरक ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! अब छठे पहर,जब रात्रि को ९ से १२ बजे का समय होता है, की महिमा बेशुमार है क्योंकि उस पहर में धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी, पारब्रह्म अक्षरातीत की, परमधाम के २५ पक्षों की चर्चा सुनाते हैं जिसे सुनने के लिए परमधाम के खासलखास मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) बैठते हैं ।

साथ सबे बंगले मिने, बैठे होए सनमुख ।
केसव दास बानी पढ़ें, कह्यो न जाए ए सुख ॥२॥

सब सुंदरसाथ चर्चा सुनने के लिए तख्त के सामने आकर बैठते हैं । केशवदास जी वाणी पढ़ने के लिए बैठते हैं । इस अखण्ड सुख का वर्णन कहा नहीं जा सकता ।

कुरान हदीसां बांचने, बैठत है दास लाल ।
गोकुलदास पढ़त हैं, करने राज खुसाल ॥३॥

लालदास जी के साथ गोकुलदास कुरान और हदीसों की वाणी पढ़ने की सेवा करते हैं । जिससे श्री जी बहुत प्रसन्न होते हैं ।

इत चरचा होत है चोपसों, बरखा होत अद्वैत ।
रसना मीठी सों कहें, उड़ जात सब द्वैत ॥४॥

इस समय आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी रसमयी रसना से मग्न होकर अखंड परमधाम की वाणी का वर्णन करते हैं, जिसके सुनने से संसार का द्वैत उड़ जाता है और स्वपन की बुद्धि हट कर जाग्रत बुद्ध आ जाती है ।

Nijanand App

मुरलीधर सम्मुख बैठत, पलक न मारत नैन ।
मुख सों मुख सनमुख, श्रवण सुने मुख बेन ॥५॥

इस समय मुरलीधर श्री जी के सामने मुख सों मुख और नैनों से नैन मिलाकर बैठते हैं और अपनी नैनों की पलक भी नीचे नहीं होने देते ।

एक बाजू श्री महाराजा, और देवकरन जी साथ ।
और दुरगभान पीछल, जाके धनीएं पकड़े हाथ ॥६॥

एक तरफ छत्रसाल जी और देवकरन जी उनके साथ बैठते हैं और उनके पीछे दुर्गभान जी भी चर्चा सुनने के लिए बैठते हैं । श्री राजजी महाराज की मेहर से ही चर्चा सुनने को मिलती है ।

और चन्द्रहंस आवत, और साह रूप ।
देत श्रवना कहते, सरूप सुन्दर रूप ॥७॥

छत्रसाल जी के दरबारी चन्द्रहंस, शाह रूप भी आकर एकाग्रचित्त होकर अक्षरातीत श्री राजजी महाराज के सरूप का श्रृंगार-वर्णन सुनते हैं ।

और किसोरी आवत, बैठत चरचा में ।
झाड़ू देत बंगले मिने, सोहबत देवकरन सें ॥८॥

और किशोरी भी चर्चा में आकर बैठते हैं । चर्चा होने से पहले बंगला जी में देवकरण और किशोरी झाड़ू देने की सेवा करते हैं ।

अमानराए परबत सिंह, और नारायन दास ।
और सकत सिंह आवत, और जगत सिंह खास ॥९॥

अमानराय, परबत सिंह, नारायण दास, सकत सिंह और जगत सिंह भी इस चर्चा का रसपान करते हैं ।

हमेसा दुरगभान के, लोंगे आवत दोए ।
एक रूपैया रसोई को, पहुंचावत है सोए ॥१०॥

हमेशा दुर्गभान जी के घर से सेवा में दो लौंग आते हैं और एक रूपया रसोई की सेवा में आता है।

तुलाराम सेवा मिने, आवत दरसन को जब ।
प्रणाम करके बैठत, चरचा सुनत है तब ॥११॥

और तुला राम भाई जब चर्चा को सुनने के लिए आते हैं तो नियमानुसार पहले वो प्रणाम करते हैं, फिर चर्चा सुनने बैठते हैं ।

Nijanand App

प्रेम जी पीताम्बर, और मकुन्ददास ।
गोकुल केसव बैठत, और जेनती खास ॥१२॥

प्रेमजी, पीताम्बर, मुकुन्ददास, गोकुल, केसवदास और जयन्ती, यह प्रमुख सुन्दरसाथ भी चर्चा सुनने के लिए आकर बैठते हैं ।

और सूरतसिंह मकरन्द, और मोंनी गिरधर ।
भगवान सिवराम सदानन्द, और बैठे गिरधर योंकर ॥१३॥

इनके साथ सूरत सिंह, मकरंद, मोनी, गिरधर, भगवान, शिवराम, सदानन्द और दूसरे गिरधर भाई यह सब भी चर्चा सुनने के लिए आकर बैठते हैं ।

और सेख बदल बैठत, और लाल खान ।
मिहीन पठान बैठत, और अव्वल खां सुने कान ॥१४॥

शेख बदल, लाल खां, मिहीन पठान और अव्वल खां, यह चारों बड़े ईमान पूर्वक बैठ कर चर्चा सुनते हैं ।

और नूर महम्मद, और चंचल दयाराम ।
गुल जी नाथा ठाड़ा रहे, पावें चरचा में आराम ॥१५॥

नूर महंमद, चंचल, दयाराम, गुलजी, नाथा जोशी आनन्द पूर्वक चर्चा सुनते हैं ।

टेकचन्द भली भाँत सों, और दुन्द राए ।
पोहोकर दास भी आवत, गोविन्द राए बैठत आए ॥१६॥

टेकचन्द, दुन्दराए, पोहोकर दास और गोविन्द राए भी अर्शे अजीम के सुख लेने के वास्ते बैठते हैं।

केसवदास मोदी बैठत, बैठे दूजा मुरलीधर ।
इहाँ महावजी नित आवत, मोहन दास बैठे इन पर ॥१७॥

केसवदास, मोदी भाई, दूसरा मुरलीधर, महाव जी और मोहन दास भी आकर अखंड अर्शे अजीम के सुखों का आनन्द लेते हैं ।

मूल जी मामा बैठत, और काका बैठनहार ।
सन्त दास सेवा मिने, गंगा राम बैठे खबरदार ॥१८॥

मूल जी मामा, जयन्ती काका, संत दास और गंगा राम बड़े एकाग्रचित्त होकर चर्चा सुनते हैं ।

Nijanand App

और घनस्याम बैठत, कबूं नाहना भी आवत ।
छतई भी सुनत है, और सुकदेव बैठत ॥१९॥

घनश्याम भाई, छतई और शुकदेव नित्य चर्चा का आनन्द लेने के लिए आते हैं और नाहना भाई कभी-कभी चर्चा सुनने आते हैं ।

और निरंजन नरसिंह दास, बैठे मके साहमन ।
सिंघ घासी ब्रजभूषण, और धना सोहबत इन ॥२०॥

निरंजन, नरसिंह दास, मके, साहमन, सिंह, घासी, ब्रजभूषण और धना यह सब श्री जी के चरणों में अपनी आतम को आनन्द विभोर करने के लिए बैठते हैं ।

वीर जी मोदी आवत, और लच्छी सुकल ।
मिडई नित चरचा सुने, बिन सुने न पड़े कल ॥२१॥

वीरजी मोदी, लछी, शुकल, मिडई यह सब नित्य चर्चा सुनते हैं । जब तक यह चर्चा नहीं सुन लेते, विरहनी मछली की तरह तड़फते रहते हैं ।

बिहारी फरास आवत, और बिहारी झंडूला ।
दूर खड़ा सुनत है, भगवान कलाम अल्ला ॥२२॥

बिहारी फराश, बिहारी झंडूला यह दोनों आनन्द मग्न होकर चर्चा सुनते हैं । भगवान भाई दूर खड़े-खड़े ही श्री जी की चर्चा सुनता है ।

मामा बनमाली दास आवत, और बैठत धन जी इत ।
लालमन और संकर, और नारायन बैठत ॥२३॥

मामा बनमाली दास, धन जी, लालमन, शंकर और नारायण भाई भी अखंड वाणी के सुख लेने के लिए चर्चा में बैठते हैं ।

मथुरा कासी आवत, खड़ा रहे बल्लभदास ।
सन्तदास हजूर में, परसादी मोमिन खास ॥२४॥

मथुरा, काशी, सन्तदास और परसादी यह सबसे आगे आकर बैठते हैं और बल्लभदास खड़ा होकर चर्चा का अखंड सुख ले रहा है ।

Nijanand App

और असऊ बैठत, अगर दास आवत ।
सुने दूर बैठा गोवरधन, छबील दास बिन्दा बैठत ॥२५॥

असऊ, अगरदास, छबील दास और बिन्दा ये सब बैठकर अद्वैत वर्षा का आनंद लेते हैं और गोवर्धन दास दूर बैठकर ही रसमयी रसना में मग्न होकर आनंद ले रहे हैं ।

भिखारीदास बैठत, और मया राम ।
बेनीदास आवत, सोभा दास विसराम ॥२६॥

भिखारीदास, मैया राम, बेनीदास इन सब को चर्चा सुनने पर ही आत्म-शान्ति प्राप्त होती है ।

गजपत गरीबदास जो, और देवी दास ।
थानू बदले सुनत, और संकर रसोइया खास ॥२७॥

गजपत, गरीबदास, देवीदास, थानू, शेखबदल ये सब चर्चा सुनने के लिए बैठते हैं और शंकरभाई जो रसोई में काम करते हैं, चर्चा को आकर अवश्य ही सुनते हैं ।

स्यामजी सुनत हैं, और बैठे चंपत ।
सुख चैन खरग देऊ, और मुरली आवे इत ॥२८॥

श्यामजी, चम्पत, सुख चैन, खरगदेव और मुरली भी सब कुछ छोड़कर आकर चर्चा का आनंद लेते हैं ।

और साथी केतिक, आवे नेष्टा बंध ।
कोई आवे मरजाद में, कोई परवाह की सनंध ॥२९॥

और भी बहुत सुन्दरसाथ नेष्टाबंध होकर बैठते हैं और कुछ मर्यादा पालन करने के वास्ते ही चर्चा में बैठते हैं । कोई प्रवाह के रूप में आकर बैठते हैं ।

कोई सुनत है पुष्ट में, कोई सुने मरजाद ।
कोई परवाह में कान दे, ए सुनने की बुनियाद ॥३०॥

कुछ सुंदरसाथ पुष्टि में, एकाग्रचित्त होकर चर्चा सुनते हैं और कुछ मर्यादा पालन में सुनते हैं, अर्थात् बैठते तो अवश्य हैं, पर ध्यान कहीं और होता है । कोई प्रवाह में सुनते हैं, सुनी या ना सुनी उनके लिए एक समान होती है । इस प्रकार ये सुनने वालों की हकीकत है ।

Nijanand App

कोई ग्रहत है पुष्ट में, कोई ग्रहे मरजाद में ।
कोई परवाह में लेत है, ए बीतक कही इन सें ॥३१॥

कई सुंदरसाथ सुनकर पुष्टि से ग्रहण करते हैं, कुछ मर्यादा (नियम) पालन करने के लिए ग्रहण करते हैं और कुछ प्रवाह में ही लेते हैं व कहते हैं कि श्री राजजी की अंगना हैं तो ले ही जाएंगे । इस तरह ये सुनकर ग्रहण करने वालों की हकीकत कही है ।

एक पांव भरें पुष्ट में, दूजे मरजाद में कदम ।
एक परवाह में पांव भरें, यों सोंपी आतम ॥३२॥

अब परमधाम की ब्रह्मसृष्टि परमधाम की वाणी सुनने के बाद रहनी करके दिखाती है । कुछ सुंदरसाथ मर्यादा पालन करने के लिए ही रहनी में आते हैं और कुछ प्रवाह में रहनी में आते हैं अर्थात् सुनते ही हैं, परन्तु वास्तव में रहनी में नहीं आते । ये बीतक रहनी में आने वालों की कही है ।

यों एक एक के तीन तीन, तिन तीनों के नव ।
फेर बांटे तीन बेर, सताईस कहो ॥३३॥

इस प्रकार एक के तीन-तीन करने से नौ पक्ष होते हैं । फिर नवधा प्रकार की ९ भक्तियों को ३ से गुणा करने पर २७ पक्ष होते हैं ।

फेर के बांटे तीन बेर, ताके इक्यासी भए पख ।
और पच्चीस पख ब्रह्मसृष्ट के, कहें उन ऊपर अलख ॥३४॥

फिर उन २७ पक्षों को ३ से गुना किया तो ये ८१ पक्ष बैकुण्ठ तक पहुंचने के हैं । ८२वां पक्ष वल्लभाचारज मार्ग वालों का है, जो अखण्ड पक्ष है । ८३वां पक्ष अक्षर धाम तक है, जो पंच वासनाओं के लिए है और उसके ऊपर पच्चीस पक्ष, जो इन सबसे परे हैं, ब्रह्मसृष्टियों के अखण्ड सुख का ठिकाना है ।

ए पच्चीस की बात बड़ी, जिन नजर लाहूत पर ।
सो हिसाब में न आवहीं, कहों सैयों की खातिर ॥३५॥

इन २५ पक्षों की बात ही कुछ निराली है । वही इनकी बात कर सकते हैं जिनकी नजर यहां तक जाती है । जिनकी शोभा, लीला और सुखों का वर्णन अपरम्पार है पर ब्रह्मसृष्टि के वास्ते कहता हूं ।

तामें सात घाट धाम के, और जमुना जी पुल दोए ।
दसों भोम मोहोल राजत, देखो साथ तुम सोए ॥३६॥

इन २५ पक्षों में सात घाट रंग मोहोल के पूर्व की दिशा में केल, लिबोई, अनार, अमृत, जांबू, नारंगी और बट हैं और इनके सामने पूर्व दिशा में जमुना जी हैं जिस पर दो पुल हैं और रंग मोहोल की ९ भोम १०वीं आकाशी है । हे सुन्दरसाथ जी ! अपना ध्यान मूल मिलावे में लगा कर इन सुखों का अनुभव करिए।

Nijanand App

और महल चौबीस हांस को, बड़ी नहरें और जोए ।
और तालाब मानक, चार हार हवेली होए ॥३७॥

हौज कौसर की दक्षिण दिशा में २४ हांस का मेहल आता है । २४ हांस के महल के दक्षिण तरफ बड़ी नहरें (जवेरों की नहरें) आती हैं और जमुना जी हौज कौसर में पूर्व दिशा से आकर मिलती हैं । २४ हांस के महल के उत्तर में हौज कौसर तालाब आता है और बन की बड़ी नहरें माणिक पहाड़ की दक्षिण दिशा में आती हैं । माणिक पहाड़ २४ हांस के महल की दक्षिण दिशा में आया है । चार हार हवेली माणिक पहाड़ के दक्षिण तरफ माणिक पहाड़ को घेर कर आई है ।

चारों तरफ सागर के, और जिमी के होए ।
मोहलात बड़ी रांग की, गिरदपाल कही सोए ॥३८॥

इनसे आगे चारों तरफ आठों सागर आठ जिमी के घेर कर आए हैं और बड़ी रांग को घेर कर पाल आई है ।

और आठों सागर, और पहाड़ पुखराज ।
जमुना जी इहां प्रगटी, ए बेवरा करत हैं श्री राज ॥३९॥

रंग महल की उत्तर दिशा में पुखराज पहाड़ आया है जहां से जमुना जी प्रगट होकर पूर्व की दिशा में जाती है । इस प्रकार आप धाम के धनी पच्चीस पक्षों का वर्णन करके सुन्दरसाथ को सुनाते हैं ।

जहां पटी महल खुली चली, मरोर खाया और ।
इन दरम्यान कई भांत हैं, सब कहें है ठौर ॥४०॥

जमुना जी पुखराज पहाड़ से निकल कर आधी ढपी और आधी खुली पूर्व की ओर चलती हैं । वहां से दक्षिण दिशा में मुड़कर ९ लाख कोस चलती हैं । इनके दोनों किनारों पर अति सुन्दर मोहोलों और चबूतरों की शोभा अपरम्पार बनी है ।

ए चरचा नित होत है, भोम कही अद्वैत ।
पच्चीस पख में सब है, उड़े सुनते द्वैत ॥४१॥

इस तरह धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ने इन पच्चीस पक्षों का जर्रा-जर्रा वर्णन किया । ये पच्चीस पक्ष अखण्ड अद्वैत परमधाम के हैं, जिसकी चर्चा प्रतिदिन होती थी । इसके सुनने से मिथ्या संसार छूट जाता है ।

Nijanand App

श्री राज और स्यामा जी, ए दोनों जुगल किसोर ।
रूहें रहें दरगाह में, ए तीनों एक सरूप न और ॥४२॥

उस अखंड परमधाम के अंदर श्री राजजी और श्यामा जी दोनों एक युगलकिशोर सरूप हैं और १२००० रूहें सदा इन्हीं के अंग हैं व इनके चरणों में रहती हैं । यह तीनों एक ही सरूप हैं तथा इनमें और कोई शामिल नहीं हो सकता ।

लखमी जी और भगवान जी, ए दोनों एकै अंग ।
ए हैं अंग श्री राज के, ए पांचों अद्वैत एक संग ॥४३॥

लक्ष्मी जी और अक्षर ब्रह्म ये दोनों अक्षरधाम में रहते हैं । ये दोनों ही श्री राजजी महाराज के सत अंग से हैं और इस तरह राजजी, श्यामा जी, सखियां, अक्षर ब्रह्म और लक्ष्मी जी, इन पांचों से अक्षरातीत श्री राजजी महाराज का सत्, चिद, आनन्द सरूप होता है ।

और भगवान जी की दृष्ट से, कई कोट उपजे इण्ड ।
पल फिरे उड़त है, त्रिगुण समेत ब्रह्माण्ड ॥४४॥

श्री राजजी महाराज के सत अंग अक्षर ब्रह्म के एक पलक के इशारे से कोटि ब्रह्मांड उपजते (बनते) हैं और पल फिरते ही त्रैगुण (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) सहित सबका लय हो जाता है ।

अक्षर आवें मुजरे को, श्री धाम धनी के दीदार ।
मुजरा कर पीछा फिरें, रिझावें परवरदिगार ॥४५॥

इस प्रकार अक्षरातीत के सत अंग सर्वशक्तिमान अक्षर ब्रह्म नित्य श्री राजजी महाराज के दर्शन करने चांदनी चौक में आते हैं तथा दर्शन करने के पश्चात् अपने धनी को रिझा कर वापिस अक्षर धाम में चले जाते हैं ।

जहां राज के दिल में, इस्क रब्द कारण ।
खेल दिखाए बेवरा किया, देखो मिल मोमिन ॥४६॥

आप श्री राजजी महाराज के दिल में इश्क रब्द का बेवरा करने का विचार आया और उसका उपाय माया का खेल दिखाने से ही हो सकेगा, इसलिए मोमिनों को खेल दिखाने की बात उनके दिल में उपजा दी ।

चाह करें खेल देखनें, मैं बरजे बेर तीन ।
तुम भूलोगे तहकीक, रहे न काहू आकीन ॥४७॥

दिल में खेल देखने की चाह आ जाने के कारण मोमिनों ने श्री राजजी से खेल देखने की इच्छा प्रगट की । तब स्वामी जी कहते हैं मैनें ही तुम्हें तीन बार मना किया था और कहा था कि तुम खेल में जाकर निश्चय ही भूल जाओगी और किसी भी ब्रह्मसृष्टि को मुझ पर यकीन नहीं रहेगा ।

Nijanand App

तब रब्द करें मुझसों, मेरे कह्यो न माने कोए ।
तब सुपन दिखाऊंगा, इनों पें मंगाए के सोए ॥४८॥

अब स्वामी जी कहते हैं कि मेरे मना करने पर भी आप सबने मुझसे रब्द की और मेरा कहा किसी ने नहीं माना । तब मैंने स्पष्ट कहा कि इसका बेवरा करने के लिए मैं तुम्हें सपने का खेल दिखाऊंगा जो तुमने मांग लिया था ।

अक्षर को इच्छा भई, रूहों कैसा इस्क ।
प्रेम परवरदिगार सों, क्यों रहे साथ हक ॥४९॥

उधर अक्षर ब्रह्म के दिल में भी इच्छा पैदा हुई कि अक्षरातीत श्री राजजी महाराज की अंगनाएं (रूहें) अपने धनी के साथ कैसे इश्क की लीला करती हैं और धाम के धनी श्री राजजी महाराज कैसे प्रेम व्यवहार करते हैं, इसको मैं देखूं ?

तब हुकम कुदरत मलकूती, भई दीदार चाह जो इन ।
किन बिध नूर जमाल मोमिन, नूर सिलसिले से उपजा तिन ॥५०॥

तब अक्षरब्रह्म की योगमाया को श्री राजजी महाराज ने हुक्म दिया क्योंकि अक्षरब्रह्म को खुद श्री राजजी की लीला देखने की इच्छा हुई थी । जिस प्रकार अक्षर ब्रह्म हुक्म देकर खेल बनवाता था उसी सिलसिले से ही श्री राजजी ने खेल बनाया और उसमें स्वयं श्री राजजी मोमिनों को खेल दिखाने के लिए उतरे ।

तब रूहों के दिल उपज्या, हम खेल देखें भगवान ।
मांगे आज राज पे, हमें कब होए पहिचान ॥५१॥

उधर रूहों के दिल में भी अक्षर का खेल देखने की इच्छा उत्पन्न हो गई और एकदिली से ये निर्णय कर लिया कि आज दोपहर ३ बजे जब श्री राजजी पूछेंगे कि आज कौन से घाट जाना है तो हम मिल कर कहेंगे कि हम भी तो देखें, हमारा इश्क कैसा है ।

हम आपस में रब्द करके, आइयां पासे हक ।
हमें खेल देखन की, रहे बड़ी चाह बुजरक ॥५२॥

तब हम सब रूहें मिलकर श्री राजजी के पास आईं और कहा, हे धनी ! हमें खेल देखने की प्रबल चाहना है ।

बहुत बरज्या इनको, फेर फेर तीन बेर ।
बहुत चाह जब देखिया, उतारी बीच अंधेर ॥५३॥

तब श्री राजजी महाराज ने बहुत समझाया, तीन बार मना किया । मना करने पर भी ए रूहों ! जब तुम्हारी प्रबल इच्छा देखी तो तुम्हें माया के खेल में ब्रज में उतारा ।

Nijanand App

पहिले हुकम भगवान पे, हुआ एह सुपन ।
उतारी रूहें तिन में, आइयां खेल देखन ॥५४॥

पहले अक्षर ब्रह्म को हुकम देकर खेल बनवाया फिर उसमें खेल दिखाने को रूहों को उतारा ।

पहिले आए ब्रज में रहे, अग्यारे बरस बावन दिन ।
ता पीछे पहुंचे वृन्दावन, एक रात रोसन ॥५५॥

पहली बार में ११ साल ५२ दिन तक लीला देखी, फिर उस ब्रह्मांड का प्रलय कर दिया । फिर योगमाया के अखंड ब्रह्मांड में, नित्य वृन्दावन में, एक रात की अखंड रास की लीला देखी ।

तित तुमको इच्छा रही, तो आए तीसरी बेर ।
इन्ना इनजुलना सूरत, तुम वास्ते उतरी खैर ॥५६॥

अब आप श्री प्राणनाथ जी कहते हैं, हे मेरी परमधाम की आत्माओं ! रास का खेल देखकर जब परमधाम गए तब तक तुम्हारी इच्छा पूर्ण नहीं हुई, इसलिए तुम्हारे लिए यह तीसरा ब्रह्मांड बनाया । तुम्हारे वास्ते कुरान की अखंड वाणी और कुरान के आम सिपारे की ''इन्ना इनजुलना सूरत'' में तुम्हारा आना तथा ११वीं सदी में कयामत का जाहेर होना एक ही निशान में लिखा है ।

रसूल आए तुम वास्ते, धरी जुदी तीन सूरत ।
ए खेल तुम खातिर किया, फरदा रोज कयामत ॥५७॥

मुहम्मद साहब तुम्हारे वास्ते तीन जुदा-जुदा सूरतें धारण कर इस ब्रह्मांड में उतरे हैं । यह खेल तुम्हारे वास्ते हुआ है और कुरान में तुम्हारी ही खातिर कयामत के जाहिर होने के सात निशान लिखे हैं ।

पांच चीजें बका से उतरी, सो तुमारी खातिर ।
हुकम आया तुम पर, ले फिरस्तों का लसगर ॥५८॥

अक्षरातीत श्री राजजी महाराज की पाँच शक्तियां तुम्हारे वास्ते इस खेल में उतरी हैं । श्री राजजी महाराज ने तुम्हारी ही रक्षा के लिए परमधाम से हुक्म के स्वरूप को, फरिश्तों का लश्कर देकर भेजा है ।

जबराईल जोस धनी का, करे तुमारी वकालत ।
तुमको साफ राखहीं, कहूं पैठ न सके इल्लत ॥५९॥

श्री राजजी महाराज ने अपने जोश की शक्ति जबराईल को, मोमिनों को सब अंगों से निर्मल रखने के लिए, उनका ईमान न गिर जाये और माया की झूठी इच्छाओं में मोमिन न फंस जायें, इस वास्ते भेजा है ।

Nijanand App

असराफील आइया, अपनी फौज बनाए ।
सूर फूंका संसार में, कलाम रब्बानी गाये ॥६०॥

असराफील ने श्री राजजी महाराज की बुद्धि से अपनी सब शक्तियों को साथ लेकर हकीकत और मारफत के ज्ञान, कुलजम सरूप का अवतरण किया है ।

रूह अल्ला आए तुम पर, तिन पहिने जामें दोए ।
रूहों तुमको खेल में से, ढूंढ काढ़े सोए ॥६१॥

श्यामा महारानी तुम्हारे ही वास्ते अर्श से उतरी हैं, उन्होंने तुम्हें ही माया से ढूंढकर निकालने के लिए दो तनों में बैठ कर लीला की है ।

अरस अजीम के सुकन, जिनसों होए सिफायत ।
दीदार होए हक का, सो तुम वास्ते ल्याए इत ॥६२॥

अब स्वामी जी कहते हैं, सुन्दरसाथ जी ! मैं तुम्हारे वास्ते ही ९ भोम १०वीं आकाशी, २५ पक्षों की वाणी लेकर आया हूं, जिससे तुम्हारी पहचान सारी दुनियां को हो जाए और उनको अक्षरातीत के दर्शन हो जायें ।

सो तो सागर सुख के, बरनन करत हैं जेह ।
विचार जिनको विवेक, दिल श्रवना देत हैं तेह ॥६३॥

और उसी अखंड वाणी के सागर के सुखों का मैं वर्णन कर रहा हूं और जिनकी आत्मा जाग्रत हो चुकी है, वह ही इस चर्चा को एकाग्रचित्त होकर सुन रहे हैं ।

सातों सरूप स्याम के, बरनन करत श्री राज ।
साथ को सुख उपजावहीं, पूरें मनोरथ काज ॥६४॥

सातों सरूपों (दो रास और पांच परमधाम के) का भेद स्वयं श्री राजजी ही वर्णन करके बताते हैं जिनसे सुन्दरसाथ की मनोकामना पूर्ण होती है और हर प्रकार का सुख अनुभव होता है ।

बरनन करते धाम को, परदक्षना पुखराज ।
अहिनिस केल करत हैं, संग सैंयां श्री राज ॥६५॥

परमधाम का वर्णन करते हुए पुखराज की परिक्रमा का भी वर्णन करते हैं । पुखराज के पश्चिम और उत्तर में घाटियां आई हैं । दक्षिण में महाबन के वृक्ष आये हैं और पूर्व में यमुना जी प्रगट हुई हैं । इन सब स्थानों पर श्री राजजी अपनी रूहों के साथ दिन रात लीला करते हैं ।

Nijanand App

सातों घाट पधारते, श्री ठकुरानी जी संग ।
खेलें सब सैंयन सों, श्री धाम धनी अरधंग ॥६६॥

श्यामा महारानी जी को लेकर श्री राजजी महाराज सातों घाटों में आते हैं और १२,००० रूहों, जो उनकी अंगना हैं, के साथ खेल - क्रीड़ा, करते हैं ।

दोनों पुलों पधारत, कुंजबन मंदिर ।
जमुना जहां मरोर खाए के, आए ताल मिली यों कर ॥६७॥

जमुना जी के दोनों पुलों की शोभा देखते हुए कुंज-निकुंज के मंदिर में आते हैं । वहां से जमुना जी पश्चिम की ओर मरोड़ खाकर ताल में जाकर मिल जाती है ।

हौज दिखावत हेत सों, और चारों घाट ।
टापू बरनन करत हैं, एक हीरे को सब ठाट ॥६८॥

हौज कौसर के ताल का वर्णन बड़े प्यार से करते हैं । हौज कौसर के चारों तरफ चार घाट आये हैं। पूर्व में १६ देहुरी का घाट, पश्चिम में झुंड का घाट, उत्तर में ९ देहुरी का घाट और दक्षिण में १३ देहुरी का घाट आया है । बीच में टापू मोहलात, जहां एक ही हीरे की शोभा का ठाट है, उसका वर्णन करते हैं ।

गिरद ताल के बन भला, आगे पहाड़ मानक ।
बीच महल खेलन का, जहां खेलत हक ॥६९॥

हौज कौसर की रौंस पर घेर कर बड़े बन के पांच पेड़ आये हैं और आगे दक्षिण की तरफ मानिक पहाड़ आया है । मानिक पहाड़ के अंदर खेलने की मोहोलाते हैं जहां श्री राजजी रूहों के साथ खेलते हैं।

चौबीस फुहारे बीच में, परे चौबीस गुरजें ।
तासों परे चौबीस चादरें, गिरद परे कुण्डें ॥७०॥

हौज कौसर और मानिक पहाड़ के बीच में चौबीस हांस का महल आता है जहां चौबीस गुर्जों के कुण्डों में चौबीस चादरें फुहारों के रूप में पड़ती हैं । चौबीस कुण्डों में से होकर जल आगे चलता है ।

धनी मानक पहाड़ को, कर देत बरनन ।
जहां हिंडोले दो पहाड़ बीच, सुन सुख पावें मोमिन ॥७१॥

आप धाम के दुल्हा श्री प्राणनाथ जी मानिक पहाड़ का वर्णन करते हुए जब बड़े हिंडोले, जो मानक पहाड़ की दो भोमों के बीच आये हैं, जिनका वर्णन करते हैं तो उसे सुनकर मोमिन बड़े खुशहाल होते हैं ।

Nijanand App

जित फिरती हवेलियां, चौखूनी गिरदवाए ।
बारे हजार मंदिर हर एक में, फिरते बड़े दरवाजे आए ॥७२॥

मानिक पहाड़ में घेर कर ६,००० गोल एवं ६,००० चौखुनी हवेलियां आई हैं । एक-एक हवेली में बारह-बारह हजार मंदिर आये हैं । मानिक पहाड़ को घेर कर चार बड़े दरवाजे आए हैं ।

मानक पहाड़ से दछिन, नदी निरमल नीर ।
ताकी सिफत कह दिखावहीं, जल उजल खुस्बोए खीर ॥७३॥

मानिक पहाड़ के दक्षिण दिशा में घेरकर महानद आया है जिसका वर्णन इस प्रकार करते हैं कि जल अति निर्मल, उज्जवल, तेजोमयी, सुगन्धि वाला और दूध से उज्जवल, मिश्री से भी मीठा है ।

दोऊ बाजू देहुरे बने, बड़ी हीरे की पड़साल ।
सुन सैंयां कामिल, होत अति खुसाल ॥७४॥

महानद के दोनों किनारों पर हीरे की बड़ी पड़साल आई है । पड़सालों पर दोनों तरफ देहुरियां आई हैं । इस अखंड सुख के योग्य परमधाम की ब्रह्मसृष्टि अपने परमधाम के वर्णन को सुन कर बड़ी प्रसन्न होती हैं ।

जहां राज रमत हैं, बन की जो मोहलात ।
अत सुन्दर सोभा देत है, सो क्यों कर कहों विख्यात ॥७५॥

उसके आगे दक्षिण दिशा में बन की मोहोलातें आती हैं जहां श्री राजजी महाराज अपनी रूहों के साथ रमन करते हैं, उसकी शोभा का वर्णन अपरम्पार है ।

अत ऊंची है अलंग, गिरदवाए फिरती ।
चार हार मोहोल बनें, याकी सोभा कहों केती ॥७६॥

उसके आगे घेर कर चार हार हवेली (छोटी रांग) दक्षिण तरफ आई है । चारों हारों में मोहोल बने हैं, जिनकी शोभा कही नहीं जा सकती ।

आठों सागर ए कहे, जहां रमन की ठौर ।
टापू बेट बिराजत, कह्यो न जाए मरोर ॥७७॥

आठों सागर श्री राजजी महाराज के रमन के ठिकाने हैं । एक-एक सागर में १२-१२ हजार टापू मोहोल बने हैं । एक-एक मोहोल की ऊंचाई १२-१२ हजार भोम ऊंची है । टापू मोहोल की शोभा का वर्णन किया नही जा सकता ।

Nijanand App

और बानी कई भांत की, कह समझावत सब साथ ।
साथ अब कोई धाम में, पकड़ बैठाए हाथ ॥७८॥

और बाकी सब परमधाम का वर्णन करके आप धाम धनी श्री प्राणनाथ जी हर प्रकार से समझाते हैं। इस समय सुनने वाले सुन्दरसाथ को ऐसा अनुभव होता है जैसे परमधाम में ही घूम रहे हैं ।

ए लीला केती कहों, रात होत पहर दोए ।
कोई समें तीन जात है, चरचा कहि समझावे सोए ॥७९॥

परमधाम की लीला का वर्णन कहां तक किया जा सकता है ? इस वर्णन को करते-करते एक पहर समय अर्थात् दो पहर रात ९ से १२ बजे तक बीत जाती है और कई बार तीन पहर रात्रि के बीत जाते हैं अर्थात प्रातः काल के तीन बज जाते हैं आप धाम धनी श्री प्राणनाथ जी इस रसमयी चर्चा में मग्न होकर मोमिनों को समझाते हैं ।

श्री राज पौढ़े पलंग पर, गादी तकिए उठावें ये ।
बिहारी दास संग नाथा रहे, और साथी सामिल सेवा के ॥८०॥

अब चर्चा समाप्त होने के बाद धाम धनी इस तख्त से उठकर पौढ़ने के लिए पलंग पर आते हैं तो विहारी दास के साथ नाथा और कई सुन्दरसाथ पौढ़ने की सेज्या लगाने की सेवा में शामिल होते हैं ।

महामत कहें ए सैंयनों, ए छटे पहर की बीतक ।
अब कहों पहर सातमां, जैसी सोहोबत हक ॥८१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं, हे सुन्दरसाथ जी ! यह छठे पहर अर्थात् ९ से १२ बजे तक के समय में जो मोमिनों ने सुख लिया, उसका वर्णन किया है । अब सातमें पहर में जिस प्रकार मोमिनों ने सुख लिया, उसका वर्णन करते हैं ।

*(प्रकरण ६९, चौपाई ४१८६)*

## सातमा पहर

अब रात पहर दो गई, पोहोर चार दिन दो रात ।
उपरान्त पोहोर सातमा, कहों ताकी विख्यात ॥१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं - हे सुन्दरसाथ जी ! अब रात के दो पहर और दिन के चार पहर व्यतीत हुए अर्थात् रात के १२ से ३ बजे तक का जो सातवां पहर होता है उसमें मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) ने किस प्रकार अपने धाम धनी को रिझाने के लिए सेवा की, उस वृत्तान्त को कहते हैं । सुनो ।

Nijanand App